प्रातः क्लास 7/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। मीठे-2 रूहानी बच्चे क्या कर रहे हैं, युद्ध के मैदान में खड़े हैं। खड़े तो नहीं हो, तुम तो बैठे हो ना। तुम्हारी सेना कैसी अच्छी है! इनको कहा जाता है रूहानी बाप की रूहानी सेना। रूहानी बाप के साथ योग लगाकर रावण पर जीत पाने का कितना सहज पुरुषार्थ कराते हैं। तुमको कहा जाता है गुप्त वारियर्स। गुप्त महावीर। 5विकार, उसमें भी पहले देहअभिमान पर तुम विजय पहनते हो। बाप विश्व पर जीत पाने वा विश्व में शांति स्थापन करने लिए कितनी सहज युक्ति बताते हैं। तुम बच्चों के बिगर और कोई नहीं जानते। तुम विश्व पर शांति वा अपना शांति का राज्य स्थापन कर रहे हो। जहाँ अशांति, दुःख, रोग का नाम-निशान नहीं होता। पढ़ाई तुमको नई दुनिया का मालिक बनाती है। बाप कहते हैं—मीठे-2 बच्चो! काम पर जीत पाने से तुम 21 जन्मों लिए जगत-जीत बनते हो। यह तो बहुत सहज है। तुम हो शिवबाबा की रूहानी सेना। राम की बात नहीं। कृष्ण की भी बात नहीं है। राम कहा जाता है परमपिता परमात्मा को। बाकी वह जो राम आदि की सेना दिखाते हैं वह सभी है रांग। बंदरों की सेना होती ही नहीं। यह सभी है भक्तिमार्ग। बाप समझाते हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार भक्तिमार्ग में तुम मुझ बाप से बहुत ही दूर हो गये हो। कितने ऑरफन्स बन जाते हो। खास भारत और आम सारी दुनिया निधण के बन पड़ी है। विख के लिए कितना लड़ते-झगड़ते हैं! गायन भी है अमृत छोड़ विख काहे को खाये। अमृत तुमको इस समय ही मिलता है ज्ञान सागर से। गाया जाता है ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। कलियुग घोर-अंधियारा है। कितने लड़ाई-झगड़े, मारा-मारी है। सतयुग में यह होते ही नहीं। तुम अपना राज्य देखो कैसे स्थापन करते हो! कोई भी हाथ-पांव इसमें नहीं चलाते हो। इसमें देह का भान तोड़ना है। घर में रहते हो तो भी पहले-2 यह याद करो हम आत्मा हैं। देह नहीं। तुम आत्मा ने ही 84 जन्म भोगे हैं। अभी तुम्हारा यह अंतिम जन्म हैं। पुरानी दुनिया अभी खत्म होनी है। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग का लीप युग। चोटी छोटी होती है ना। ब्राह्मणों की चोटी मशहूर है। बाप कितना सहज समझाते हैं। तुम हर 5000 वर्ष आकर बाप से यह पढ़ते हो राजाई प्राप्त करने लिए। एमऑबजेक्ट भी सामने है। शिवबाबा हमको यह बनाते हैं। हाँ, बच्चों क्यों नहीं। सिर्फ देह-अभिमान छोड़ अपन को आत्मा समझो मुझ बाप को याद करो तो पाप कट जायें। तुम जानते हो इस जन्म में पावन बनने से हम 21 जन्म पुण्यात्मा बनते हैं। सतयुग-त्रेता में पूरे 21 जन्म लेते हैं, फिर उतराई शुरू हो जाती है। यह भी जानते हो हमारा ही 84 .... चक्र है। सारी दुनिया तो पढ़ने नहीं आवेगी। सतयुग और त्रेता बाप ही स्थापन करते हैं, जो फिर अभी कर .... हैं। फिर द्वापर-कलियुग रावण की स्थापना है। रावण का चित्र भी है ना। ऊपर में गदहे का शीश है। विकारी टट्टू बन जाते हैं। तुम समझते भी हो हम क्या थे। बाप बिगर हम कितने गंदे बन गये हैं। कहा ही जाता डर्टी ब्रूट्स। छी-छी विकारी बन जाते हैं। इनको मूत पीना कहो, विष्ठा खाना कहो, एक ही बात है। कहते ... ना असंख्य चोर हराम खोर..... यह है ही पापात्माओं की दुनिया। पापात्माओं की दुनिया में 500 करोड़ आदमी हैं। पुण्यात्माओं की दुनिया में होते हैं नौ लाख शुरू में। तुम अभी सारे विश्व के मालिक बनते हो। यह (ल॰ना॰) विश्व के मालिक थे ना। स्वर्ग की बादशाही तो ज़रूर बाप ही देंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व की बादशाही देने आता हूँ। अभी पावन ज़रूर बनना पड़े। सो भी यह एक अंतिम जन्म मृत्युलोक का पवित्र बनो। इस पुरानी दुनिया का विनाश सामने तैयार है। बॉम्स आदि सभी ऐसे तैयार कर रहे हैं जो वहाँ घर बैठे ही खलास .... देंगे। कहते भी हैं घर बैठे ही पुरानी दुनिया का विनाश कर देंगे। यह बॉम्स आदि घर बैठे ऐसे छोड़ेंगे जो .... सारी दुनिया को खत्म कर देंगे। तुम भी घर बैठे योगबल से विश्व के मालिक बन जाते हो। तुम शांति स्थापन कर रहे हो योगबल से। वह साइंसबल से सारी दुनिया को खलास कर देते हैं। तुम तुम्हारे सर्वेंट है। तुम्हारी सर्विस कर रहे हैं। तुमको पुरानी दुनिया खत्म करके देंगे। नेचरल कैलेमिटीज़ आदि भी तुम्हारे गुलाम (ब)नते हैं। सारी प्रकृति तुम्हारी गुलाम बन जाती है, सिर्फ तुम बाप से योग लगाते हो तो। तो तुम बच्चों को

अंदर में बड़ी खुशी होनी चाहिए। ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप को कितना याद करना चाहिए। यही भारत पूरा शिवालय था। अभी इनको कहा जाता है वैश्यालय; क्योंकि विकारी है। खास भारत, दुनिया आम। तो लज्जा आनी चाहिए ना। सतयुग में है सम्पूर्ण निर्विकारी, यहाँ है विकारी; परंतु यह बंदर लोग समझते ही नहीं हैं। कहते हैं तुम तो जैसे बंदर हो। यह भी समझाया है राम शिव को कहा जाता है। राम-राम जब जपते हैं तो वह त्रेता वाले राम को नहीं याद करते। माला में ऊपर में फूल भी दिखाते हैं वह निराकार है। उनको ही याद करना है। बाकी राम ने बंदर सेना ली, यह हुआ। ऐसी कोई बात है नहीं। क्रिश्चयन लोग जब ऐसी-ऐसी बातें सुनते हैं तो हँसी उड़ाते हैं, यह तो मैड चैप्स हैं। राम की सीता चुराई गई कृष्ण को इतनी रानियाँ थीं। कितनी दोष रखते हैं। अभी तुमको स्मृति आई है बरोबर हम भी बंदर थे। अभी बाप ने कहा है हियर नो ईविल..... गंदी बातें मत सुनो। मुख से बोलो भी नहीं। बाप समझाते हैं तुम कितने डर्टी बन गये हो। तुम्हारे पास तो अकीचार धन था। तुम स्वर्ग के मालिक थे। अभी तुम स्वर्ग के बदली नर्क के मालिक बन गये हो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। हर 5000 वर्ष बाद हम तुमको वैश्यालय रौरव नर्क से निकाल स्वर्ग में ले जाता हूँ। रूहानी बच्चो! क्या तुम मेरी बात नहीं मानोगे? परमात्मा कहते हैं–पवित्र बनो, तुम पवित्र दुनिया के मालिक बनो, तो क्या नहीं बनेंगे? एक जन्म के लिए तुम सारी अपनी राजाई गंवाते हो। बाकी आठ वर्ष हैं। विनाश तो ज़रूर होगा। इस योगबल से ही तुम्हारे जन्म जन्मांतर के पाप भस्म होंगे। जन्म-जन्मांतर के पाप कटने में टाइम लगता है। बच्चे शुरू से आये हुये हैं 10% भी योग नहीं लगता। इसलिए पाप कटते ही नहीं। नये-2 झट योगी बन जाते हैं तो पाप कट जाते हैं और सर्विस करने लग पड़ते हैं। तुम बच्चे समझते हो अभी हमको वाइसलेस बनना है। हमको वापस जाना है। बाप आया हुआ है ले जाने। पापात्माएँ तो शांतिधाम-सुखधाम जा न सके। वह तो रहते ही हैं दुखधाम में। इसलिए अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। अरे, बच्चे गुल-2 हो जाओ। दैवीकुल का कलंक न लगाओ। तुम विकारी बनने कारण कितने दुखी हो गये हो। यह भी ड्रामा का खेल बना हुआ है। पवित्र न बनेंगे तो पवित्र दुनिया स्वर्ग में नहीं आवेंगे। भारत स्वर्गवासी था, कृष्णपुरी में था। अभी नर्कवासी है। तुम बच्चों को तो बड़ा ही खुशी से विकारों को छोड़ना चाहिए। मूत पीना फट से छोड़ना है। मूत पीते-2 तुम वैकुण्ठ में थोड़े ही जा सकेंगे। अभी यह बनने लिए तुमको पवित्र बनना है। तुम समझा सकते हो इन्होंने यह राजाई कैसे प्राप्त की। राजयोग से। यह पढ़ाई है ना। जैसे बैरिस्टरी योग, सर्जन योग होता है। सर्जन से योग रखकर सर्जन बनेंगे। यह फिर है भगवानुवाच। रथ में कैसे प्रवेश करते हैं। कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में मैं इनमें बैठ बच्चों को नॉलेज देता हूँ। जानता हूँ यह विश्व का मालिक, पवित्र था। अभी अपवित्र कंगाल बने हैं फिर पहले नम्बर में यह जावेंगे। इसमें ही प्रवेश कर तुम बच्चों को नॉलेज देते हैं। बेहद का बाप कहते हैं बच्चे पवित्र बनो तो तुम सदा सुखी बनेंगे। सतयुग है अमरलोक। द्वापर-कलियुग है मृत्युलोक। कितना अच्छी रीति बच्चों को समझाते हैं। यहाँ देहीअभिमानी बनते हैं फिर देहअभिमान में आकर माया से हरा लेते हैं। माया की एक ही तोप ऐसी लगती है जो एकदम गटर में गिर पड़ते हैं। बाबा सिंध में भी वाणी चलाते थे, तुमको यह मूत अच्छा लगता है तो गटर में ही पड़े रहे(रहो)। मनुष्यों को इसमें बड़ा सुख आता है। बाप कहते हैं यह गटर है। यह कोई सुख थोड़े ही है। स्वर्ग तो फिर क्या। इन देवताओं की रहनी-करनी देखो कैसी है। नाम ही है हेविन। स्वर्ग। तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। फिर भी कहते हैं हम मूत ज़रूर पीयेंगे। तो पड़े रहो गटर में। फिर आना भी नर्क में। स्वर्ग में आ न सकोगे। सज़ा भी बहुत खावेंगे। तुम बच्चों को(की) माया से युद्ध है। देहअभिमान में आकर बहुत छी-छी काम करते हैं। समझते हैं हमको कोई देखता थोड़े ही है। क्रोध, लोभ तो प्राइवेट नहीं होता। काम में प्राइवसी चलती है। दरवाजा बंद कर काला मुँह करते हैं। काला मुँह क(र)ते-2 कृष्ण की आत्मा 84 जन्मों बाद काले बन गये हैं। गोरे से सांवरा बनना है। तो

सारी दुनिया ही उनके पिछाड़ी आ गई। द्वापर से लेकर गिरते-2 काले बंदर बन गये हैं। यानी करतूत ऐसी है। ऐसी पतित दुनिया को बदलना भी ज़रूर है। बाप कहते हैं तुमको शर्म नहीं आता! एक जन्म के लिए पवित्र नहीं बन सकते हो! भगवानुवाच काम महाशत्रु है। वास्तव में तुम स्वर्गवासी थे तो बहुत धनवान थे। बात मत पूछो! बच्चे कहते भी हैं–बाबा चलो, क्यों काँटों के जंगल में बंदरों को देखने चलें? नहीं, अभी तो चलना ही नहीं है। बंदरों को देखकर माथा ही पता नहीं क्या हो जाता है। तुम बच्चों को तो ड्रामा अनुसार सर्विस करनी ही है। गाया जाता है ना फादर शोज़ सन। बच्चों को ही जाकर सभी का कल्याण करना है। बाप को तो कहाँ जाना न है। कहाँ भी जाने दिल नहीं होती है। शिवबाबा इसके रथ में बहुत ही भटका ज्ञान देने लिए। अभी नहीं भटकेंगे। बाप बच्चों को समझाते हैं यह भूलो मत। हम युद्ध के मैदान में हैं। तुम्हारी युद्ध है 5 विकारों साथ। यह ज्ञानमार्ग बिल्कुल अलग है। भक्ति है अज्ञान मार्ग। गिरते-2 जाकर नर्क में पड़े हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ 21 जन्मों के लिए। फिर तुमको नर्कवासी कौन बनाते हैं? रावण। फर्क तो देखते हो ना। जन्म-जन्मांतर तुमने भक्तिमार्ग के गुरु किये हैं। प्राप्ति कुछ भी नहीं। इनको कहा जाता है सद्गुरु। सिक्ख लोग कहते हैं ना सद्गुरु अकाल..... इनको कब कोई काल नहीं खाता। वह सद्गुरु तो कालों का काल है। बाप कहते हैं मैं तुम सभी बच्चों को काल के पंजो से छुड़ाने आया हूँ। सतयुग में फिर काल आता ही नहीं। उनको अमरलोक कहा जाता है। अभी तुम श्रीमत पर अमरलोक सतयुग के मालिक बन रहे हो। तुम्हारी लड़ाई देखो कैसी है! सारी दुनिया एक/दो में लड़ते-झगड़ते हैं। तुम्हारी फिर है रावण 5 विकारों साथ युद्ध। उनपर तुम जीत पाते हो। यह है अंतिम जन्म। मनुष्य समझते हैं यह ब्रह्माकुमारियाँ गपोड़ा मारती रहती हैं। एक कहानी भी है ना। एक ने कहा शेर रे शेर; परंतु शेर आया नहीं। दो/चार बारी ऐसे हुआ, तो समझा शेर आवेगा ही नहीं। तो एक दिन आ ही गया। यह भी ऐसे समझते हैं ब्रह्माकुमारियाँ गपोड़ा मारती हैं। आखिर एक दिन तो जैसे खत्म हो जावेगा। अभी कौरव सम्प्रदाय सभी अपने धंधे में हैं। उन्हों को फुर्सत ही कहाँ है। बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज़ हूँ। यहाँ आते भी गरीब ही हैं। साहूकारों की तकदीर में अभी नहीं है। धन के नशे में ही मगरूर रहते हैं। यह सभी खत्म हो जाने वाला है। बाकी आठ वर्ष हैं। ऐसे मत समझना आठ वर्ष से 9 वर्ष हो जावेगा नहीं, नहीं। और ही ..... हो जावेगा; परंतु 9 नहीं होंगे। ड्रामा का ऐसा प्लैन है ना। यह इतने बॉम्स आदि बनाये हैं, वह काम में ज़रूर ला(नी) है। पहले तो लड़ाई बाणों से, तलवारों से, बंदूकों से चलती थी। अभी तो बॉम्स ऐसी चीज़ निकली है जो घर बैठे ही खलास कर देंगे। यह चीज़ें कोई रखने लिए थोड़े ही बनाते हैं। कहाँ तक रखेंगे! बाप आये हैं तो विनाश ज़रूर होना है। ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। जब तक तुम्हारी राजाई ज़रूर स्थापन होनी है। यह ल॰ना॰ तो कब लड़ाई नहीं करते। भल शास्त्रों में लिखा हुआ है असुरों और देवताओं की लड़ाई हुई; परंतु वह सतयुग (के), असुर कलियुग के। दोनों मिलेंगे कैसे जो लड़ाई होगी। अभी तुम समझते हो हम 5 विकारों से युद्ध कर रहे हैं। इन पर जीत पाये सम्पूर्ण निर्विकारी बन हम निर्विकारी दुनिया के मालिक बन जावेंगे। उठते-बैठते बाप को याद करना है। दैवीगुण धारण करनी है। यह बना बनाया ड्रामा है। कोई-2 के नसीब में नहीं है। योगबल हो तब (वि)कर्म विनाश हों। सम्पूर्ण बने तब सम्पूर्ण दुनिया में आ सके। बाप यह शंख ध्वनि करते रहते हैं। उन्होंने फिर भक्तिमार्ग में शंख वह तूतारे आदि बैठ बनाये हैं। बाप जो इस मुख द्वारा समझाते हैं यह पढ़ाई है राजयोग की। बहुत ही सहज पढ़ाई है। बाप को याद करो और राजाई को याद करो। बेहद के बाप को पहचानो और राजाई लो। इस दुनिया को भूल जाओ। तुम बेहद के सन्यासी हो। जानते हो यह पुरानी दुनिया सारी खत्म हो (जा)नी है। इन ल॰ना॰ के राज्य में सिर्फ भारत ही था। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी मीठे-2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।